International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 02(II), April- June, 2025, pp. 187-191

आधुनिक भारतीय कला के संदर्भ में चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति

नवल किशोर जाट*

सहायक आचार्य–चित्रकला, राजकीय कन्या महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान।

*Corresponding Author: naval9782348680@gmail.com

सार

श्रृंगार रस को प्राचीन काल में सौन्दर्य शास्त्रियों ने बड़े विस्तृत विवरण व उत्साह के साथ अपने लेखों व कविताओं में वर्णन किया है। इसे राजाओं की भावनाओं के साथ जोड़ा गया है तथा इसे रसों का राजा कहा गया है। कला में श्रृंगार रस को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। साहित्य में भी श्रृंगार रस 7वीं शताब्दी से ही दृष्टिगोचर होता है। श्रृंगार का स्थाई भाव प्रेम है। भरत मुनि के अनुसार प्रेम विभाव तब उत्पन्न होता है जब प्राणी मात्र के अन्दर प्रेम का भाव अथवा विचार उत्पन्न होता है। ऋतुओं में बदलाव फूलों या गहनों की खुशी इसके मुख्य आकर्षण है। प्रेम का अनुभव हम नेत्रों की हलचल, दृष्टि, अंगों की नाजुक हलचल या झुकाव और मीठे स्वर आदि के द्वारा कर सकते हैं। श्रृंगार रसर सबसे ज्यादा प्रभावशाली रस है, श्रृंगार रस अत्याचार, डर की भावना और धोखेबाजी से दूर रखता है। भारतीय कला में प्रेम दर्शाती मूर्ति की अभिव्यंजना पत्थरों पर जितनी काव्यात्मकता एवं आध्यात्मिकता के साथ दर्शाई गई है। शायद ही संसार में इसका उदाहरण कहीं और हो इसके उदाहरण भरहूत, सांची से लेकर खजुराहो, कोणार्क, अजन्ता तथा पहाड़ी लघुचित्रों में देखने को मिलते हैं। भारतीय कला में धर्म का स्थान सर्वोपरि रहा है इसी कारण भारतीय कला सदा ही धार्मिक रही है। भारतीय कलाकारों का मुख्य उद्देश्य सूक्ष्म धार्मिक भावनाओं को स्थूल आध्यात्मिक रूप देना था इन्हीं भावों को सुशोभित करने की कला बौद्ध युग में भी देखने को मिलती है।

शब्दकोशः *भारतीय कला, चित्रकला, श्रृंगारिक अभिव्यक्ति, काव्यात्मकता, आध्यात्मिकता।*

प्रस्तावना

भारत में बौद्धकला की महान विरासत भित्तिचित्रों के रूप में सुरक्षित है। इन भित्तिचित्रों के माध्यम से बौद्धकला ने इतनी लोकप्रियता प्राप्त की कि जिससे उत्तर–पश्चिम सीमाप्रान्त और मध्य एशिया के समस्त देशों की कलात्मक अभिरूचियों के क्षेत्र में एक महान परिवर्तन की स्थिति लक्षित हुई। बौद्धकला की इस महान थाती का समृद्ध केन्द्र अजन्ता है। भारतीय संस्कृति की महानता का रहस्य उसकी आध्यात्मिकता है। भारत के आचार–विचारों का अनुसंधान और अनवेशण अजन्ता के सन्दर्भ में करना आज के समय में विशेष उपयोगी है। भौतिक सभी प्रकार के कार्य क्षेत्रों में कला का विशेष स्थान रहा है। भारतीय जनमानस में कला आदिकाल से ही समाहित है इतिहास इसका साक्षी रहा है। भारत की कला धर्म से प्रेरित रही है जिसमें सत्य, शिव और सुन्दरम् (सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्) तीनों का समन्वय है।

चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति के अध्ययन पर शोधार्थी का ध्यान इसलिए भी आकृ ट हो जाता है क्योंकि इस क्षेत्र में हुए शोध कार्य की संख्या बहुत कम है। श्रृंगारिक अभिव्यक्ति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन, स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्र्योत्तर भारतीय श्रृंगारिक कला, श्रृंगारिक अभिव्यक्ति की पद्धत्ति और तकनीकी, श्रृंगारिक चित्रकला में भारतीय चित्रकारों का योगदान और भारतीय श्रृंगारिक अभिव्यक्ति कला के प्रमुख केन्द्र

और संस्थान की भूमिका और विकास में योगदान इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी के द्वारा शोध अध्ययन के लिए **''आधुनिक (समकालीन) भारतीय कला के संदर्भ में चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति''** का चुनाव किया गया है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व

पुराने मौकों पर, उत्कृष्टता विशेषज्ञों ने अपने लेखों और सॉनेट्स में श्रृंग रस को असाधारण विस्तार और ऊर्जा के साथ चित्रित किया है। यह शासकों की संवेदनाओं से संबंधित है और इसे रसों के स्वामी के रूप में जाना जाता है। कारीगरी में श्रृंगार रस का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार लिखित रूप में सौंदर्य प्रसाधनों का रस सातवीं शताब्दी से ही स्पष्ट है। सौंदर्य प्रसाधनों की स्थायी अभिव्यक्ति प्रेम है। जैसा कि भरत मुनि ने संकेत दिया है, प्रेम तब प्रकट होता है जब जानवर के अंदर झुकाव या माना गया प्रेम उभरता है। इसका सिद्धांत आकर्षण ऋतुओं का समायोजन, फूलों की खुशी या छँटाई है। हम प्रेम का सामना आंखों के विकास, दृष्टि, उपांगों के नाजुक विकास या कांप, और मधुर आवाज से कर सकते हैं, और आगे श्रृंगार रसारा सबसे अच्छा निचोड़ है, श्रृंगार रस उत्पीड़न, भय और गलत दिशा की अनुभूति से बचाता है। भारतीय शिल्प कौशल में प्रेम को चित्रित करने वाले प्रतीक के बहिर्वाह को पत्थरों पर उतनी ही कविता और अन्यता के साथ प्रदर्शित किया जाता है। इसका वास्तव में दुनिया में कहीं भी कोई उदाहरण नहीं है, इसके उदाहरण भरहुत, सांची से लेकर खजुराहो, कोणार्क, अजंता और पहाड़ी तक की छोटी–छोटी कलात्मक कृतियों में पाए जाते हैं। भारतीय शिल्पकला में धर्म का स्थान केंद्रीय रहा है, यही कारण है कि भारतीय शिल्प कौशल लगातार सख्त रहा है। भारतीय शिल्पकारों का मूल लक्ष्य विनीत कठोर भावों को स्थूल गहन रचना देना था, इन भावों को संवारने की विशेषता बौद्ध काल में भी मिलती है।

भारत में बौद्ध कारीगरी की असाधारण विरासत को भित्तिचित्रों के रूप में सहेजा गया है। इन भित्ति चित्रों के माध्यम से, बौद्ध कारीगरी ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की कि इसने उत्तर–पश्चिम सीमा प्रांत और मध्य एशिया के प्रत्येक राष्ट्र की कल्पनात्मक प्राथमिकताओं में एक असाधारण परिवर्तन को दर्शाया। अजंता बौद्ध कारीगरी के इस असाधारण स्थान का समृद्ध केंद्र है। भारतीय संस्कृति के महत्व का रहस्य इसकी अलौकिकता है। अजंता के संबंध में भारत की नैतिकता और विचारों की परीक्षा और परीक्षा वर्तमान समय में विशेष रूप से मूल्यवान है। वास्तविक कार्यक्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला में शिल्प कौशल का एक असाधारण स्थान है। प्राचीन काल से ही भारतीय जनता में कारीगरी का समावेश किया गया है, इतिहास इसका पर्यवेक्षक रहा है। धर्म ने भारत की विशेषता को जीवंत किया है जिसमें सत्य, शिव और सुंदरम (सत्यम, शिवम, सुंदरम) तीनों का मिश्रण है।

शोध की परिकल्पनाएँ

किसी भी कार्य की शुरूआत सौद्देश्यपूर्ण होती है। लक्ष्य निर्धारण किया जाता है। अनुसंधान में लक्ष्य का निर्धारण प्राकल्पना के रूप में किया जाता है। अनुसंधान में बिना प्ररिकल्पना के एक कदम भी आगे बढना संभव नहीं है।

सामान्य शब्दों में परिकल्पना का अर्थ होता है। 'पूर्व चिंतन' यह अनुसंधान का दूसरा महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसे अग्रेंजी में ''हाइपोथीसिस'' कहा जाता है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है। ''हाइपो थीसिस'' ''हाइपो'' का अर्थ ''संभावित'' तथा ''थीसिस'' का अर्थ ''समस्या के समाधान का कथन'' होता है। ''हाइपोथीसिस'' का शाब्दिक अर्थ है। ''समाधान के संभावित कथन'' अथवा ''संभावित समस्या के समस्या के कथन''। अतः परिकल्पना ऐसे समाधान को प्रस्तुत करती है, जिसकी पुष्टी आँकड़ो के लिए की जा सके। परिकल्पना किसी भी शोध के बारे में बनने वाली ऐसी प्रस्थापना होती है, जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए शोधकर्ता एक सटीक विधितंत्र द्वारा उसका परीक्षण करता है। इस प्रकार यह शोधकर्ता के मस्तिष्क में उत्पन्न एक प्रकार के अनुमान हाते है जो यह निरुपित करतें हैं कि विभिन्न घटक किस प्रकार अन्तर्सम्बन्धित है।

प्रस्तुत शोध में अध्ययन क्षेत्र के बारे में शोधकर्ता के मस्तिष्क में चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति के कारण उत्पन्न परिदृश्य परिकल्पना के रुप में उभरे है। **''आधुनिक (समकालीन) भारतीय कला के संदर्भ में चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति''** के सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित परिकल्पनाओं को जांच करने का प्रयास किया गया है–

- कला में कामुकता की अभिव्यक्ति सिर्फ इन्द्रिय सुख पाने के लिए है या उससे अधिक।
- कला में कामुकता की अभिव्यक्ति धार्मिक अनुष्ठान की वजह से है या कोई अन्य कारण है।
- कला में कामुकता कि अभिव्यक्ति संस्कृति व रिति रिवाजो की वजह से या उससे अधिक ? कला में कामुकता की अभिव्यक्ति सामाजिक व दार्शनिक विचारों से है या उससे अधिक।
- कला में कामुकता की अभिव्यक्ति सृष्टि का आधार है या उससे अधिक ?
- कला में कामुकता की अभिव्यक्ति सत्यम्–शिवम्–सुन्दरम् की अभिव्यक्ति है या कोई अन्य कारण है।

कामुकता बल की एक स्थिति है जहाँ ऊर्जा वितरित और परीक्षण की जाती है। मैं गहराई से विश्लेषण करूंगा कि शरीर का मोटा टुकड़ा कामुक प्रकृति और आकर्षण का एक संयोजन है, जो आनंद, मोक्ष देता है, इसके अलावा यौन उत्तेजना का भय और दमित ऊर्जा का आगमन जो हम देख सकते हैं। शिल्प कौशल एक स्वतंत्र समाज की कल्पना और यौन अवसर के बीच दबाव को उजागर करता है, एक दृष्टिकोण से आम जनता की इच्छाएं और तंत्रिकाएं हैं, फिर मुझे विश्वास है कि यह परीक्षा न केवल कार्य कौशल की समीक्षा पेश करेगी बल्कि यह भी देगी हमें इसकी अस्थिरता। हमें करने की शक्ति को याद रखने में मदद मिलेगी जो हमें अप्रत्याशित तरीके से कार्य करने और सोचने के लिए विवश करती है। एकत्रित सूचनाओं के आधार पर पूर्व में उल्लिखित अटकलों का निरीक्षण कर वास्तविक उत्तर का पता लगाने का सार्थक प्रयास किया जाएगा, जिससे यह शोध–पत्र इस विषय पर समग्र एवं आंतरिक शोध प्रदान करने में प्रभावी होगा।

शोध के उद्देश्य

- इस शोध को करने का प्राथमिक उद्देश्य यह जानने का होगा कि इस प्रकार की अभिव्यक्तियो का सृजन कला में क्यों हुआ जो संग्रहालय, मंदिरों व लधुचित्रों के रूप में विभिन्न जगहो पर संग्रहित है।
- इस प्रकार की आकृतियॉ जो संसार भर में बनी है, बावजूद एक सशक्त अभिव्यक्ति के किस प्रकार इसका सम्बंध सांस्कृतिक रीति रिवाजों, पौराणिक कथाओ व सामाजिक संरचना से जुड़ा रहा है जो पूरी तरह से यह समझने में सहायता करेगी कि किस प्रकार इस प्रकार की आकृतियॉ विकसित होती रही, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास पर भी प्रकाश डालने का रहेगा।
- यह उद्देश्य इस विषय की अभिव्यक्तिओ के तार्किक कारण को जानने की व इस विषय को सृजित होने के कारणो को जानने का होगा जो सामाजिक, सास्कृतिक व पौराणिक कथाओ से बहुत गहरे रूप से जुडे है और जो सृष्टि का आधार है।

शोध विधि एवं आँकड़ों के स्त्रोत

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत **''आधुनिक (समकालीन) भारतीय कला के संदर्भ में चित्रकला में श्रृंगारिक अभिव्यक्ति''** विषय के संदर्भ में आँकडों को संकलित करने के लिए विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों को माध्यम बनाया गया है। किसी भी प्रबंध में तथ्यों के संकलन की विधि, सूचनाओं के विश्लेषण व शोध के प्रतिवेदन आदि के लिए एक निश्चित प्ररचना का निर्धारण करना होता है। इस सम्पूर्ण शोधकार्य में दो प्रकार की शोध प्रविधियां अपनाई गयी है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध कार्य को सम्पन करने हेतु शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से आँकडों को एकत्रित किया गया है। प्राथमिक स्तर की सूचनाओं व जानकारियों को अध्ययन क्षेत्र के प्रत्यक्ष

अवलोकन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार पद्धती और द्वितीयक स्तर के तथ्यों को मुख्यतः सरकारी एवं गैर–सरकारी विभागों, स्थानीय लोगों तथा समाचार–पत्रों से एकत्रित किया गया है।

शोध प्रबंध के अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु स्थानीय, स्वदेशी और विदेशी पर्यटकों, पर्यटन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार विधि पर आधारित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के संकलन हेतु सम्बन्धित विभाग, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय द्वारा प्रकाशित सांख्यिकी डाटा, चित्रशालाओं, तहसील स्तरीय चित्रकला के विभाग, राजस्थान राज्य संग्रहालय व कार्यालय इत्यादि सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित सूचनाओं का विश्लेषण किया गया है।

- प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति के द्वारा किया गया है।
- शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दृष्टिकोणों को अपनाया गया है।
- शोध क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आँकड़ों एवं द्वितीयक आँकड़ों को आधार बनाकर तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

कारीगरी की दुनिया में प्राचीन काल से अब तक शिल्प कौशल में काम के बयान पर बहुत कुछ समझाया गया है, फिर भी यह अभिव्यक्ति किस कारण से हुई ? इस विषय में कोई स्वीकार्य जांच कार्य नहीं किया गया है, मैं इस विषय पर शोध कार्य के लिए अपनी खोज करूंगा। प्रारंभिक कदम के रूप में, विषय के सामाजिक अंतर्निहित भागों को समझने का प्रयास किया जाएगा। मेरे विषय के रूप में, जो इस बात पर केंद्रित है कि कारीगरी में काम की अभिव्यक्ति को मिश्रित प्रकार के आकर्षण और झुकाव के कारण संप्रेषित किया गया था, जिसे विद्वानों के स्रोतों में चित्रित किया गया है, तदनुसार मेरा अगला प्रयास इन कलात्मक स्रोतों पर विचार करके इस विषय को समझने का होगा। आवश्यक और वैकल्पिक स्रोतों के रूप में ध्यान केंद्रित करने के मद्देनजर, मैं पास में ही अध्ययन कार्य पूरा कर लूंगा। इस प्रकार की अभिव्यक्ति को समझने के लिए, मैं मूल रूप से उन अभयारण्यों पर विचार करूँगा जहाँ हाँ अभी तक इसके अलावा इस तरह की अभिव्यक्तियाँ की गई हैं।

अंतिम अग्रिम के रूप में, मैं एकत्रित जानकारी की एक सापेक्ष जांच करूंगा और परीक्षा के अनुसार उनका उपयोग करूंगा और उन समकालीन विशेषज्ञों से मिलूंगा जिन्होंने इस मामले के बारे में अपनी भावनाओं को संप्रेषित किया है या संवाद कर रहे हैं और मैं यह समझने का प्रयास करूंगा कि इसका क्या औचित्य है अभिव्यक्ति। साथ ही उनके अनुसार आम जनता में इस विषय पर बनाए गए मॉडल और पेंटिंग के महत्व को जानने का काम किया जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक चित्रकला, प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2006
2. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – जापान की चित्रकला– देव ऋषि प्रकाशन, अलीगढ़
3. अशोक – जापान की चित्रकला– ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
4. अग्रवाल जी.के. – कला समीक्षा–ललित कला प्रकाशन, अलीगढ़
5. अग्रवाल डॉ. गिर्राज किशोर – भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक इतिहास कला और कलम– अशोक प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़– 2012
6. अग्रवाल, आर. ए. : कला विलास–भारतीय चित्रकला का विकास, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1984, 2000ण
7. अग्रवाल, आर. ए. एवं चोयल, पी.एन. : चित्र संयोजना, लायल बुक डिपो, मेरठ, 1981
8. अग्रवाल, गिर्राज किशोर : कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, 1980
9. अशोक–कला निबन्ध – संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, आगरा– 2012

10. आर्य, विनोद कुमार : भारतीय कला की कहानी, अंकुर बुक डिपो, अजमेर, 2001
11. आठवले सदाशिव, इतिहासाचे तत्त्वज्ञान (दूसरा संस्करण) प्राज्ञ पाठशाला मंडल, वाई, 1986
12. आठवले सदाशिव, इतिहासाचे तत्वज्ञान, पाज्ञ पाठशाळा मंडळ, वाई (दूसरा संस्करण), 1986
13. इनामदार एस डी, बहुलकर सुहास, आधुनिक महाराष्ट्राची जडण घडण, शिल्पकार चरित्र कोश, खंड 6ठा, (दृश्य कला), साप्ताहिक विवेक, हिंदुस्थान प्रकाशन संस्था, मुम्बई, 2013
14. उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी – कलावार्ता अंक 120–121 अप्रैल से सितम्बर 2008– भोपाल
15. उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, कला वार्ता संयुक्तांक 121–122 अप्रैल से सितम्बर 2008, भोपाल
16. उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर : भारतीय कला की कहानी, दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, 1994

पत्रिकायें

17. सम्मेलन पत्रिका, कला अंक
18. मार्ग
19. आकृति
20. कला संगम
21. कलावार्ता
22. कलादीर्घा
23. कादम्बिनी
24. समकालीन कला
25. रागरंग (वार्षिक पत्रिका), आगरा
26. रूपलेखा

❖◆❖